RO. 25/12

मूल्यांकित उत्तरपुस्तिका

दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

(Hindi Literature)

mentorship prog

टेस्ट-11

(प्रथम प्रश्न-पत्र)

DTVF / OPT-21 M1-HL11

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time Allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक : 250 *Maximum Marks : 250*

नाम (Name): Bharat Jai prakash meena

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.): [redacted]

ई-मेल पता (E-mail address): bharatjaiprakash 970@gmail.com

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): T-11 , 24 Dec. 2021

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2021] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2021]:

0	8	7	2	7	2	6

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS**.*

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 144   टिप्पणी (Remarks):

मूल्यांकनकर्ता (कोड तथा हस्ताक्षर) *Evaluator (Code & Signatures)* E-51	पुनरीक्षणकर्ता (कोड तथा हस्ताक्षर) *Reviewer (Code & Signatures)* K-11

दृष्टि The Vision

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

उत्तर अच्छे हैं।
पाठ्यक्रम पर पकड़ अच्छी है।
विषय-वस्तु की समझ अच्छी है।
भूमिका व निष्कर्ष अच्छे हैं।
भाषा प्रवाहपूर्ण है।
उत्तरों का प्रस्तुतिकरण अच्छा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खण्ड - क

1. निम्नलिखित पद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या कीजिये: 10 × 5 = 50

(क) राम नाम के पटतरै, देबे कौं कुछ नाहिं।

क्या ले गुरु संतोषिए, हौंस रही मन माहिं।।

प्रसंग एवं संदर्भ - व्याख्येय पद्यांश भक्तिकाल के क्रांतिकारी कवि कबीर के श्यामसुंदर दास द्वारा संकलित कबीर ग्रंथावली से लिया गया है। जिसमें कबीर 'गुरुदेव कौ अंग' के माध्यम से गुरु का महत्व दर्शा रहे हैं।

व्याख्या :- कबीर कहते है रामनाम का जप करना ही पर्याप्त नहीं है जब तक की त्याग की एवं दान की भावना मन में न हो। कबीर के अनुसार व्यक्ति अहंकार से मुक्त होकर ही ईश्वर प्राप्ति कर सकता है तथा अहंकार मुक्ति गुरू के माध्यम से ही हो सकती है।

विशेष - ① गुरु का महत्व दर्शाया है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(2) कबीर ने त्याग का महत्व दर्शाया है।
(3) कबीर ने अन्य स्थान पर गुरु की महिमा का वर्णन करते हुये कहा है-

"सतुगुरु हमसूं रिझकर, कह्यॉ एक प्रसंग।
वर्षल्या बादल प्रेम का, भीग गया सब अंग॥"

(4) कबीर की इसी भाषा की वजह से आचार्य द्विवेदी ने "वाणी के डिक्टेटर एवं भाषा के बादशाह कहा है।"

प्रासंगिकता - गुरु का महत्व आदिकाल में सिद्ध-नाथ साहित्य में भी बताया है तथा वर्तमान में भी गुरु सही पथ पर प्रेरणा देने की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

V. Good
6½/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) पाइ महावरू दैन कौं नाइनि बैठी आइ।
फिरि फिरि, जानि महावरी, एड़ी मीड़ति जाइ॥

संदर्भ एवं प्रसंग - व्याख्येय काव्य पंक्ति रीतिकालीन शृंगारिक चेतना को अभिव्यक्ति को दर्शाने वाले प्रमुख कवि बिहारी की 'बिहारी सतसई' से उद्धृत है जिसमें नायक - नायिका के प्रेम के माध्यम से रीतिकालीन शृंगार का चित्रण है।

व्याख्या - बिहारी के अनुसार नायिका, मुस्किल से नायक के पास आके बैठती है परंतु, फिर-फिर, जान-पहचान के कारण घुपने का प्रयास करते है जो कि रीतिकालीन सामंती दौर में

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

महिला की स्थिति भी दर्शाता है।

विशेष -

① ब्रजभाषा
② दोहा छंद
③ श्रृंगार - चेतना वर्णन
④ नख - शिख वर्णन
⑤ रीतिकालीन दरबारी साहित्य का वर्णन

प्रासंगिकता - प्रेम का आम जनमानस की दृष्टि से वर्णन किया है -

" गदराने तन गोरटी, ऐपन आड़ लिलार।
हूठ्यो दै इठलाइ कै, दृग करै गवाँरी सुमार ॥ "

Good
6

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ग) चुराता न्याय जो, रण को बुलाता भी वही है,
युधिष्ठिर! स्वत्व की अन्वेषणा पातक नहीं है।
नरक उनके लिए, जो पाप को स्वीकारते हैं;
न उनके हेतु जो रण में उसे ललकारते हैं।

संदर्भ एवं प्रसंग - प्रस्तुत काव्य-पंक्तियाँ, राष्ट्रकवि दिनकर द्वारा युद्ध - दर्शन पर दृष्टि डालने वाली कविता - कुरुक्षेत्र से ली गयी है जिसमें महाभारत के युद्ध के पश्चात् युधिष्ठिर - भीष्म के संवाद का वर्णन है।

व्याख्या - भीष्म पितामह युधिष्ठिर से कहते हैं कि युधिष्ठिर, युद्ध के लिये वही व्यक्ति जिम्मेदार होता है जो न्याय चुराता है तथा अन्याय के लिये कार्य करता है। न्याय का नियम यही है कि उठकर अन्याय से युद्ध लड़ो, यही क्षत्रिय का धर्म है। अन्याय को सहना तो कायरता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष –

① द्वितीय - विश्व युद्धकालीन अस्तित्ववादी दर्शन का प्रभाव है।

② खड़ी बोली में तत्समीपन है।

③ न्याय का नियम, भीम ने युधिष्ठिर को बताया है।

④ युधिष्ठिर में निर्वेद को मार्मिक रूप से दर्शाया है।

⑤ अशोक पर कलिंगविजय का प्रभाव।

प्रासंगिकता – वर्तमान दौर में जब आतंकवाद, नक्सलवाद जैसी समस्याएं पैदा हो रही हैं उनसे लड़ना ही न्याय का तकाजा है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट घंटाघर चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुधा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) मेरे हार गए सब जाने-माने कलावंत,
सबकी विद्या हो गई अकारथ, दर्प चूर,
कोई ज्ञानी गुणी आज तक इसे न साध सका।
अब यह असाध्य वीणा ही ख्यात हो गई।
पर मेरा अब भी है विश्वास
कृच्छ-तप वज्रकीर्ति का व्यर्थ नहीं था।
वीणा बोलेगी अवश्य, पर तभी।
इसे जब सच्चा स्वर-सिद्ध गोद में लेगा।

संदर्भ एवं प्रसंग – प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रमुख प्रगतिवादी रचनाकार अज्ञेय कृत 'असाध्य - वीणा' से लिया गया है जिसमें राजा - प्रियंवद के मध्य का संवाद वर्णित है।

व्याख्या – राजा, प्रियंवद से कहते हैं कि मेरे सभी जाने - माने कलाकार प्रयास करने के बाद भी इस वीणा से संगीत की सृष्टि नहीं कर पाये हैं। परंतु, मुझे विश्वास है कि वज्रकीर्ति का यह श्रम व्यर्थ नहीं जायेगा तथा सच्चे साधक द्वारा वीणा को साधे जाने पर वीणा अवश्य बोलेगी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

विशेष -

① सृजन तत्व की रहस्यवादी व्याख्या

② भाषा में तत्समीपन है।

③ बिम्बों की सघन अभिव्यक्ति

④ मानवीकरण अलंकार -
'वीणा बोलेगी अवश्य।'

⑤ प्रतीकात्मक भाषा

⑥ बौद्ध धर्म का प्रभाव

प्रासंगिकता -
वर्तमान में किसी लक्ष्य को साधने हेतु अहम शून्यता एवं अहंकारहीनता का संदेश असाध्य वीणा देती है

"मौन प्रियंवद साध रहा था वीणा,
नहीं वह स्वयं अपने को शोध
रहा था।"

V. Good 6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) आनन्ददात्री शिक्षिका है सिद्ध कविता-कामिनी,
है जन्म से ही वह यहाँ श्रीराम की अनुगामिनी।
पर अब तुम्हारे हाथ से वह कामिनी ही रह गई,
ज्योत्स्ना गई देखो, अँधेरी यामिनी ही रह गई!

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग - प्रस्तुत गद्यांश द्विवेदी युगीन अनुशासनवादी धारा के शिखर राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित 'भारत - भारती' से वर्तमान खंड से लिया गया है जो कि एक उद्बोधन काव्य है।

व्याख्या - गुप्त जी मानना है कि भारत में प्राचीन काल से ही कविता कर्म एक शिक्षिका के रूप में लोक-कल्याण का कार्य कर रही थी परंतु, वर्तमान दौर में अंग्रेजी शिक्षा के प्रभाव में उसका महत्व सिर्फ नौकरी दिलाने एवं स्वार्थपूर्ति में रह गया है तथा लोक-कल्याण की दृष्टि से शिक्षा एवं लेखन का अभाव है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष:-

① पंक्तियों में द्विवेदीयुगीन इतिवृत्तात्मकता द्रष्टव्य है।

② छंद - हरिगीतिका   हरिगीतिका

③ भाषा - खड़ी बोली

④ लोक प्रयोजन की दृष्टि से कविता का महत्व दर्शाया है।

⑤ अन्यत्र महत्व -
" केवल मनोरंजन न कवि का
कर्म होना चाहिये।
उसमें उचित उपदेश का भी
मर्म होना चाहिये॥"

प्रासंगिकता - शिक्षा एवं शिक्षक का भी वर्तमान में भी महत्व है। इसलिये सरकार ने नई शिक्षा - नीति लागू की है।

V. 6½

6½/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

2. (क) 'उपालंभ के क्षेत्र में जो अद्भुत सफलता सूर को मिली है, शेष कवि उसके आसपास भी नहीं पहुँच सके हैं।'-क्या सूर का काव्य इस कथन की पुष्टि करता है? विश्लेषणात्मक उत्तर दीजिये। 20

सूरदास से पूर्व भी भ्रमर के माध्यम से उपालंभ काव्य का इतिहास रहा है जिसमें कालिदास का अभिज्ञान शांकुतलम् उल्लेखनीय है। परंतु, सूर ने उपालंभ काव्य को नई ऊँचाई पर पहुँचा दिया है जिसकी ~~पुष्टि~~ स्वयं सूरदास का काव्य एवं शुक्ल जी जैसे आलोचकों ने भी की है। ऐसे प्रमुख वर्णन निम्न है ~~फिर~~ जो इसकी पुष्टी करते है-

(1) यशोदा, द्वारा कृष्ण के मथुरा जाने पर नंद को उलाहना देना।

"नंद! ब्रज लीजै ठोकि बजाई।"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(2) सूर ने गोपियों के माध्यम से उद्धव के ज्ञान मार्ग पर भी उपालंभ किया है तथा प्रेम की श्रेष्ठता साबित करने का प्रयास किया है।
"निर्गुण कौन देश को वासी,
को है जनक, जननि को कहियत,
कौन नारी को दासी।"

(3) गोपियों द्वारा, कृष्ण के निरमोहीपन होने एवं कुब्जा के साथ प्रेम-प्रणय के संबंध में। कुब्जा को भी उलाहना किया है।
"उधौ जाके माथे भाग;
कुब्जा को पटरानी कीन्हीं,
हमहिं देत वैराग।"

(4) कृष्ण से एकनिष्ठ प्रेम करने

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वाली गोपियाँ यहीं नहीं रुकती; बल्कि, कृष्ण की चतुरता को राजनीति कहकर व्यंग्य करती है

"हरी है राजनीति पढ़ि आये;
इक अति चतुर हुते पहिले ही,
अरू करू नेह सिखाये।"

(5) गोपियों ने कृष्ण पर उपालंभ के माध्यम से शहरी जीवन एवं ग्रामीण जीवन में अंतर को व्यक्त किया है जो आज भी प्रासंगिक है -

"वे नागर मथुरा निरमोहिं,
अंग-अंग भरे ~~कुटिल~~ कपट चतुराई।"

(6) गोपियों ने उद्धव को प्रकृति से सीखने का उलाहना देकर प्रेम मार्ग की श्रेष्ठता साबित की है -

"ऊधो कोकिल कूजत कानन;
तुम हमको उपदेश करत हो,
भस्म लगावत आनन।"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

7) सूर ने गोपियों के माध्यम से गोरखनाथ के योग परंपरा पर भी कटाक्ष किया है -

आयो घोष बड़ो व्यापारी;
लादि खेप गुन-ज्ञान जोग की,
ब्रज में आन उतारी।"

तुलसी ने भी गोरख के योग- भक्ति का विरोध किया है -

"गोरख जगायो जोग, भगति भगायो योग।"

स्पष्ट है सूर के काव्य की वाग्विदग्धता एवं भाव प्रेरित वक्रता की तारीफ करते हुये शुक्ल जी, भ्रमरगीत परंपरा में सर्वश्रेष्ठ उपालंभ काव्य बताते हैं।

Good A
12/20

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'भावों का उत्कृष्ट और उदात्त स्वरूप बिहारी में नहीं मिलता। उनकी कविता शृंगारी है पर प्रेम की उच्च भूमि पर नहीं पहुँचती, नीचे रह जाती है।' इस मत के संदर्भ में बिहारी के काव्य का अवगाहन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बिहारी का काव्य रीतिकालीन दरबारी-साहित्य के दौर में श्रृगार मूलक एवं देह का नग्न वर्णन प्रस्तुत करने वाली कविता है जो कि प्रेम के चित्र भी खींचती है-

शृंगार

(1) बिहारी नायक-नायिका के एक-दूसरे के प्रति देखकर चल रही अठखेली का निम्न वर्णन करती है-

"कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत खिलत लजियात,
भरे भौन में करत है, नैननुं ही सौं बात।"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

② बिहारी की श्रृंगारी चेतना में प्रेम - वर्णन राज-दरबार से बाहर, आमजन के चित्र भी खींचती है।

(क) ग्रामीण युवती का सौंदर्य वर्णन मनमोहक है -

"गदराने तन गोरटि,
आपन ऐड़ लिलार।
हूड्यो दै इठलाइ दृग,
करै गवारी सुमार॥"

(ख) नायिका का वर्णन

"इत आवत चलि जात उत,
चलि छ-सातक हाथ।"

~~चलि हिंडोरे सी रहे~~

③ बिहारी ने परिवार के भीतर भी श्रृंगार-प्रेम का वर्णन खींचा है तथा नायक -

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

नायिका की हँसी - ठिठोली का चित्रण किया है- राधा - कृष्ण के माध्यम से

बतरस लालच लाल की,
मुरली धरि लुकाय।
सौंह करे भौंहनु हँसै,
दैन कहै नटि जाय।।"

अच्छे 08/15

निबंध भी लिखें

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) क्या कबीर की काव्य-भाषा काव्यात्मकता की कसौटी पर खरी उतरती है? तार्किक उत्तर दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कबीर मध्यकाल की संत काव्य धारा के प्रतिनिधि कवि हैं जिनकी भाषा में सजगता की बजाय सहजता अधिक है। आचार्य शुक्ल ने भी कबीर की भाषा को अत्याधिक परिष्कृत एवं परिमार्जित न बताते हुये भी प्रभाव में विलक्षण एवं चमत्कृत करने वाली भाषा कहा है।

वस्तुतः कबीर, निरक्षर माने जाते है उनका कहना है -

"जिन्ह तुम्ह जान्यौ गीति है
वह निज ब्रह्म विचार।"

निरक्षर होने के बावजूद भी तथा बिम्ब, अलंकार जैसे

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

काव्यशास्त्रीय प्रतिमानों से अनभिज्ञ होने के बावजूद भी उनके काव्य में ये बिखरे पड़े हैं।

कबीर भाषा को लगातार प्रवाहशील एवं निरंतर विकास की प्रक्रिया से गुजरने वाली मानते हैं उनका मानना है-
"संस्कीरत है कूप जल,
भाषा बहता नीर।"

कबीर की भाषा पर लगे आरोपों के जवाब में आचार्य द्विवेदी ने "कबीर को वाणी का डिक्टेटर एवं भाषा का बादशाह कहा है।" भाषा पर उनका जबरदस्त अधिकार था तथा भाषा उनके सामने लाचार सी नजर आती थी।

प्रमुख कसौटियाँ -

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

① प्रसंग के अनुकूल भाषा का चयन कबीर की प्रमुख विशेषता है मुल्लो हेतु फारसी तथा पंडो को डॉटने के लिये तत्सम शब्दों का प्रयोग उनकी विशेषता है-

"कांकर-पाथर जोरी के, मस्जिद लई बनाय।
ता चढि मुल्ला बांग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय॥"

② द्विवेदी के अनुसार शब्दों के चयन में मुखिया शब्द उनकी भाषा पर पकड़ दर्शाता है।

③ द्विवेदी जी के अनुसार व्यंग्य की तीव्रता, कबीर की वाणी को अद्वितीय एवं क्रांतिकारी बनाती है।

④ कबीर की वाणी में श्रृंगार एवं माधुर्य भी है-

"तलफै बिन बालम मोरा जिया।"

स्पष्ट है निरक्षर होने के बावजूद भी कबीर भाषा के बादशाह कहे जा सकते है।

Good 9/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) कबीर की भक्ति-भावना का स्वरूप स्पष्ट कीजिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) कबीर के काव्य में उपस्थित रहस्यवाद के विभिन्न रूपों पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रहस्यवाद सूफी धर्माख्यानकारों के साथ भारत आया जिसका प्रभाव कबीर एवं अन्य कवियों पर भी दिखता है।

कबीर

साधनात्मक रहस्यवाद — भावनात्मक रहस्यवाद

कबीर पर दोनों का प्रभाव दिखाई देता है।

साधनात्मक रहस्यवाद –

साधनात्मक रहस्यवाद कबीर को अपनी नाथ - परंपरा से मिला, जिसके कारण उनके काव्य में अक्खड़ता एवं क्रांतिकारी स्वर दिखाई देते हैं। कबीर ने नाथों की परंपरा के अनुसार व्यापक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

योग क्रिया पर्यन्त, कुण्डलिनी का महाकुण्डलिनी से मिलन की अनुभूति नहीं हुई। कबीर ने योगियों की खेचरी मुद्रा का वर्णन किया है-

अवधू गगन घर मंडल कीजै;
अमृत झरै सदा रस उपजै
वंक नालि रस पीजै।

योगियों के बताये रास्ते पर लम्बे समय तक चलने के बाद भी कबीर को परम तत्व की प्राप्ति नहीं हुई तो उन्होंने योग की जगह भक्ति का मार्ग पकड़ लिया इस संदर्भ में कहा है-

"कबीर पखरि टेक भगति की,
काजि रहे अरु मारि।"

भावनात्मक रहस्यवाद:-

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भक्ति की पावन परंपरा में स्थित प्रेम तत्व का प्रभाव कबीर पर व्यापक रहा परंतु, नाम - परंपरा एवं सूफी परंपरा के अनुसार ईश्वर को निर्गुण निराकार माना है-

दशरथ सुत तिहुँ लोक बखाना
राम नाम का मरम न जाना।"

भावनात्मक रहस्यवाद के प्रभाव में ही कबीर, शंकर के समान जगत को ब्रह्म की अभिव्यक्ति तो मानते हैं परंतु, ज्ञानमार्ग की बजाय, भक्ति मार्ग पर बल देते हैं। कबीर के काव्य में परम तत्व की प्राप्ति की तीव्र भावना भावनात्मक रहस्यवाद का ही प्रमुख प्रभाव है जिसका

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वर्णन निम्न पंक्तियों करती हैं-
"तलफै बिन बालम मोर जिया;
दिन नहिं चैन रात नहीं निदिया,
तलफ-तलफ के मोर जिया।"

कबीर ने इसी संदर्भ में ईश्वर मिलन की तड़प का भी वर्णन किया है जो सूफियों की इश्क मजीजी से इश्क हकीकी के समान प्रतीत होती है -

जब मैं था तब हरी नहीं,
अब मैं हूँ हरी नाहिं।
प्रेम गलि अति साँकरी,
जा में दोऊ ना समाय॥"

स्पष्ट है कबीर पर भावनात्मक रहस्यवाद का व्यापक प्रभाव रहा जो कि पहले साधनात्मक था।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'बिंब-निर्माण-कौशल' की दृष्टि से 'असाध्य वीणा' का अवगाहन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

असाध्य-वीणा, अज्ञेय की प्रमुख रचना है जो कि जापान में प्रचलित हाइकु प्रणाली में लिखित कहानी पर आधारित है।

अज्ञेय ने असाध्य-वीणा के माध्यम से सृजन तत्व की व्याख्या की है जिस पर इलियट, फ्रायड जैसे पश्चिमी विद्वानों के साथ-साथ नव्यवेदांत एवं जेन-बौद्धमत का प्रभाव है।

काव्य प्रतिमानों की दृष्टि से भी असाध्य-वीणा एक प्रयोगधर्मी रचना मानी जाती है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बिम्ब एक पश्चिम की विधा है जिस पर फिलॉर जैसे कवियों एवं शाम्भिकों का प्रभाव है। हिन्दी में बिम्बों को चित्रभाषा कहा जाता है। जिसका तात्पर्य है कि कविता का प्रभाव पाठक के ऐन्द्रिक ~~कै देन~~ अनुभूति के योग्य होना चाहिये।

असाध्य वीणा भी बिम्ब की दृष्टि से शिखर कविता है-

① दृश्य -बिम्ब

"मौन प्रियंवर साध रहा था वीणा;
नहिं वह स्वयं अपने को शोध रहा था।"

② अज्ञेय ने प्राकृतिक चित्रों

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

के माध्यम से कोमल एवं सुकुमार बिम्ब भी दर्शाये है- करी शुंडे, हिमालय के जैसा विशाल आकार आदि तुलनाये इसकी पुष्टि करती है।

(3) ध्वनि - बिम्ब -

विभिन्न पशु-पक्षियों की ध्वनियों का वर्णन, जो कि वीणा में समाया हुआ है।

"अलस अँगड़ाई लेकर जाग उठी थी वीणा।"

आचार्य शुक्ल ने भी अज्ञेय के काव्य में बिम्ब वर्णन को देखकर कहा है कि काव्य में बिम्ब ग्रहण भी अपेक्षित होता है।

आचार्य शुक्ल की भावना पर अज्ञेय नहीं उतरे हैं

ठीक है

8½

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) ''ब्रह्मराक्षस' अस्तित्ववादी मान्यताओं और खंडित व्यक्तित्व का प्रतीक है।' आप इस मत से कहाँ तक सहमत हैं? 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ब्रह्मराक्षस, मुक्तिबोध की प्रमुख प्रयोगधर्मी कविता है जिस पर मार्क्सवादी मान्यताओं का गहरा प्रभाव माना जाता है।

मुक्तिबोध की सभी रचनाओं में प्रायः मध्यवर्गी बुद्धिजीवी का संघर्ष केन्द्र में रहता है। ब्रह्मराक्षस के माध्यम से मुक्तिबोध के अस्तित्ववादी मान्यता एवं खंडित व्यक्तित्व का चित्रण किया है -

① ब्रह्मराक्षस, आत्मचेतस एवं विश्वचेतस की दुविधा से ग्रस्त, अनिर्णय की

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

स्थिति से जूझ रहा है जो तात्कालिक अस्तित्ववादी मानव की प्रमुख समस्या भी। इसी प्रयास में वह मर गया।

कोठरी में अपना गणित करता रहा,
और मरा पाया।"

(2) ब्रह्मराक्षस, व्यक्तित्व का महत्व नहीं पहचान सका तथा व्यक्तित्व से lost मुक्ति के प्रयास हेतु प्रयत्न करता रहा, जो कि असंभव था।

"मैं ब्रह्मराक्षस का जलता हुआ शिष्य होना चाहता,
जिससे बदला सकूँ उसे उसकी औत्सुक्यता का महत्व।"

(3) मुक्तिबोध की कविता अंधेरे में विश्वचेतस होने का प्रयास नहीं करता परंतु,

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

ब्रह्मराक्षस, इस कविता में इसका प्रयास करता है परंतु जनजीवन में सक्रियता के अभाव के कारण वह सफल नहीं हुआ।

"एक चढ़ना औ उतरना,
पुन: चढ़ना औ उतरना।
बाँह- छाती पर अनेको घाव।"

स्पष्ट है मुक्तिबोध, अस्तित्वादी दर्शन एवं खंडित व्यक्तित्व की समस्या का व्यापक समाधान बताने मे सफल रहे है जो उस दौर के बुद्धीजीवी की समस्या थी।

ध्यान से
15

प्रमाण मान्य है
मॉडल उत्तर भी देख लें

दृष्टि The Vision 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित पद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या कीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) मंगलु बिंदु सुरंगु, मुखु ससि केसरि-आड़ गुरु।
इक नारी लहि संगु, रसमम किय लोचन-जगत।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग -

प्रस्तुत काव्यांश निर्गुण संत कवि कबीर कृत कबीरग्रंथावली से लिया है जिसका संकलन श्याम - सुंदर दास ने किया है। गुरु को अंग के माध्यम से कबीर ने गुरु महिमा का वर्णन किया है।

व्याख्या -

कबीर गुरु की महिमा का वर्णन करते हुये कह रहे हैं कि एक नारी का साथ एवं रस की प्राप्ति, गुरु की भक्ति एवं कृपा से व्यक्ति को हर कर सकती है।

"नारी की झाई पड़त,
अंधा होत भुजंग।"

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष –

1. गुरु का महत्व
2. भाषा में तत्समीपन
3. नारी की संगत का प्रभाव वर्णन
4. दोहा छंद
5. भाषा पर नाथों का प्रभाव - सेधा भाषा

प्रासंगिकता – वर्तमान उपभोक्तावादी दौर में गुरु द्वारा सही मार्ग प्रशस्त कर नैतिक रास्ता बताया जा सकता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) रघुनायक आगे अवनी पर नवनीत-चरण,
श्लथ धनु-गुण है, कटिबन्ध स्रस्त-तूणीर-धरण,
दृढ़ जटा-मुकुट हो विपर्यस्त प्रतिलट से खुल
फैला पृष्ठ पर, बाहुओं पर, वक्ष पर, विपुल
उतरा ज्यों दुर्गम पर्वत पर नैशान्धकार,
चमकतीं दूर ताराएँ ज्यों हो कहीं पार।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything is this space)

संदर्भ एवं प्रसंग - प्रस्तुत काव्यांश छायावाद के प्रमुख स्तंभ कवि निराला कृत राम की शक्ति पूजा से लिया गया है। जिसमें रामसेना का वर्णन है।

व्याख्या - रामसेना पर रात के दृश्य का वर्णन, पर्वत के समान विशाल भुजा वाले राम के शरीर पर अनेकों घाव के निशान है तथा नवनीत चरण दर्शनीय है। युद्ध की निराशा बहुत गहरी है कि सिर्फ तारों की ही एकमात्र रोशनी दिख रही है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष -

① मुक्त छंद का प्रयोग
② खड़ी बोली
③ तत्समीपन
④ शक्तिकाव्य का प्रतिमान
⑤ शक्ति का अन्याय की तरफ झुका होने की चिंता दर्शाती है।
⑥ सीता - मुक्ति की चिंता।

बिम्ब की चर्चा भी

प्रासंगिकता - निराला द्वारा, राम के माध्यम से प्रेमिका के रूप में सीता मुक्ति का प्रयास लैंगिक सशक्तिकरण दृष्टिकोण से अनुकरणीय है

और है

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ग) भर भादौं दूभर अति भारी। कैसें भरौं रैनि औंधियारी।

मँदिल सून पिय अनतै बसा। सेज नाग भै धै धै डसा।

रहौं अकेलि गहें एक पाटी। नैन पसारि मरौं हिय फाटी।

चमकि बीज घन गरजि तरासा। बिरह काल होइ जीउ गरासा।

बरिसैं मघा झँकोरि झँकोरी। मोर दुइ नैन चुवहिं जसि ओरी।

पुरबा लाग पुहुमि जल पूरी। आक जवास भई हौं झूरी।

संदर्भ एवं प्रसंग - प्रस्तुत पद्यांश अवधी भाषा के प्रमुख सूफी कवि जायसी कृत पद्मावत से लिया गया है जो कि एक सूफी प्रेमाख्यान है।

व्याख्या - पद्मावती, बारहमासा रूढ़ियों के माध्यम से विरह वर्णन करते हुये कहती है कि पिया बिन, भादौं की कड़कती बिजली नाग द्वारा डसने के समान लग रही है। तथा भादौं की वर्षा, पिया बिन मनभावन नहीं लग रही है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

विशेष –

1. अवधी का माधुर्य व मिठास
2. ठेठ देशी शब्द - पृष्ठभूमि
3. अनुप्रास अलंकार
4. बारहमासा काव्य-रूढ़ि का प्रयोग
5. नागमति का विरह-वर्णन
6. मध्यकालीन स्त्री की परवशता की अभिव्यक्ति

प्रासंगिकता – मध्यकालीन नारी की जड़ता एवं अज्ञानता का वर्णन। जिससे वर्तमान में सीखकर, नारी सशक्तिकरण हेतु प्रयास किये जा सकते हैं

Good A- 6½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) सोइ रावन कहुँ बनी सहाई। अस्तुति करहिं सुनाइ सुनाई।।
अवसर जानि बिभीषनु आवा। भ्राता चरन सीसु तेहिं नावा।।
पुनि सिरु नाइ बैठ निज आसन। बोला बचन पाइ अनुसासन।।
जौं कृपाल पूँछिहु मोहि बाता। मति अनुरूप कहौं हित ताता।।
जो आपन चाहै कल्याना। सुजसु सुमति सुभ गति सुख नाना।।
सो पर नारि लिलार गोसाईं। तजउ चउथि के चंद कि नाईं।।
चौदह भुवन एक पति होई। भूतद्रोह तिष्टइ नहिं सोई।।
गुन सागर नागर नर जोऊ। अलप लोभ भल कहइ न कोऊ।।
दोहा: काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक के पंथ।
सब परिहरि रघुबीरहि भजहु भजहिं जेहि संत।।

संदर्भ एवं प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ रामभक्ति - काव्यधारा के शिखर कवि तुलसी कृत सुंदरकांड (रामचरितमानस) से लिया गया है जिसमें विभीषण - रावण संवाद का मार्मिक वर्णन है।

व्याख्या - सीता को रावण द्वारा हरण कर लंका लाने पर विभीषण, रावण को समझाते हुये, पुनः सीताजी को ससम्मान रामजी के पास छोड़ने एवं राम की शरण में

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जाने का सुझाव देते है जिस पर रावण उन्हें लात मारकर लंका से बाहर निकाल देता है।

विशेष –

① दोहा, छंद है।
② अवधी भाषा
③ विभीषण के माध्यम से भातृ प्रेम अभिव्यक्ति
④ भाषा में तत्समीपन
⑤ शब्दालंकारों का प्रयोग

प्रासंगिकता – विभीषण के समान वर्तमान में भी भाई का कर्तव्य है कि वह अपने भाइयों को सही मार्ग सुझाये।

Good A

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) स्वारथ को साज न समाज परमारथ को,
मोसों दगाबाज दूसरो न जगजाल है।
कै न आयों, करौं न करौंगो करतूति भली,
लिखी न बिरंचि हू भलाई भूलि भाल है।
रावरी सपथ, राम! नाम ही की गति मेरे,
इहाँ झूठो झूठो सो तिलोक तिहूँ काल है।
तुलसी को भलो पै तुम्हारे ही किये कृपालु!
कीजै न बिलंब, बलि, पानी भरी खाल है।।

संदर्भ एवं प्रसंग - व्याख्येय काव्यांश भक्तिकालीन सगुण-भक्ति के प्रमुख रामभक्त कवि तुलसी कृत - कवितावलि, उत्तरकाण्ड से लिया गया है जिसमें तुलसी की राम के प्रति दास्य-भक्ति का वर्णन है।

व्याख्या - तुलसी राम से विनती करते हुये कहते हैं कि मेरे जैसा दगाबाज का भला तो कृपालु भी राम ही कर सकते हैं क्योंकि उन्होने अनेक अधर्मी व कपटी राक्षसों को भी संसार से मुक्ति दी है

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष –

(1) भाषा – ब्रजभाषा
(2) लोकमंगल काव्य है।
(3) दास्य भक्ति
(4) अनुप्रास अलंकार
(5) मुहावरे - लोकोक्तियों का प्रयोग

प्रासंगिकता –

वर्तमान में भक्ति के माध्यम से मन की शांति एवं नैतिकता का मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है

और हैं

6/10

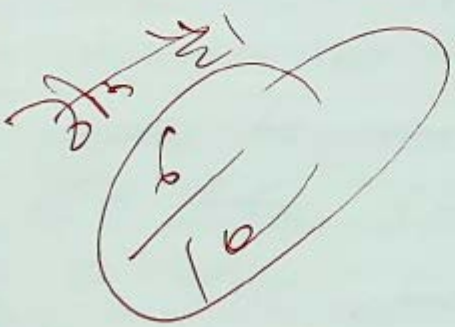

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

6. (क) 'कामायनी मानव-मन एवं मानवता के विकास की कहानी है।' इस मत के संदर्भ में कामायनी की काव्य-वस्तु का अनुशीलन कीजिये। 20

कामायनी छायावाद के प्रमुख स्तंभ प्रसाद द्वारा लिखित महाकाव्य है जो कि अपनी प्रतीकात्मकता के कारण नये-नये अर्थों की अभिव्यक्ति करता है।

प्रसाद ने स्वयं कहा है कि मनु, श्रद्धा एवं इड़ा जैसे पात्र अपना ऐतिहासिक अस्तित्व बनाये रखते हुये अन्य अर्थ भी अभिव्यक्ति करें तो उन्हें कोई समस्या नहीं है क्योंकि यह आख्यान उतना पुराना है कि उसमें सहज ही रूपक का अद्भुत मिश्रण हो गया है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कामायनी मनु, भारतीय सभ्यता के प्रारंभिक पुरुष द्वारा सृष्टि की रचना के माध्यम से मानवता के विकास की कहानी का वर्णन करती है।

① देव सभ्यता का पतन एवं प्रलय, भारतीय समाज में मान्य तत्व है।

② मनु द्वारा सृष्टि की रचना।

③ मानव द्वारा बुद्धि रूपी इड़ा के वश में आते जाना तथा अपनी मूल प्रकृति श्रद्धा से दूर होते जाना।

④ भौतिक सुख हेतु प्रकृति का शोषण करना, जिसका प्रयास मनु - इड़ा के साथ

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मिलन करता है।

"यह प्रकृति परम रमणीय अखिल ऐश्वर्य भरी शोधकविहीन।"

(5) अंततः पुनः प्रकृति का चक्र घूमता है और सभ्यता का विनाश।

मानव मन के संदर्भ में

मनु → हृदय = श्रद्धा
→ बुद्धि = इड़ा

मनु - मानव मन के दो पक्षों हृदय एवं बुद्धि का प्रतीक है जो इन्हीं के प्रभाव में संचालित होता है।

(1) मनु - श्रद्धा, श्रद्धा सर्ग में मिलन तथा पुनः सृष्टि का विकास करना।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(2) सृष्टि के विकास हेतु बुद्धि का महत्व दर्शाया है तथा प्रसाद ने कहा है कि बुद्धि की बात न मानकर मनुष्य किसकी शरण में जाये।

(3) श्रद्धा द्वारा मानव को इड़ा, रूपी बुद्धि को सौंपना, बुद्धि का महत्व दर्शाता है।

(4) श्रद्धा रूपी हृदय को बुद्धि से श्रेष्ठ बताकर प्रसाद, हृदय की भावनाओं के अनुसार जीने का संदेश देते है।

(5) इच्छा, क्रिया व ज्ञान के मध्य संतुलन हेतु, हृदय का महत्व है।

स्पष्ट है कामायनी मानवता एवं मन के विकास की समासोक्ति है।

Good 12/20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'दिनकर के 'कुरुक्षेत्र' में अपने समय की अनुगूँज सुनाई देती है।' इस मत के संदर्भ में कुरुक्षेत्र के प्रतिपाद्य पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कुरुक्षेत्र, दिनकर द्वारा अशोक के कलिंग-विजय पर लिखी कविता कलिंगविजय के पश्चात् युद्ध दर्शन का वर्जन करती है जो तत्कालीन सभी समस्याओं के युद्ध के आवरण में लपेटने का प्रयास करती है।

दिनकर ने कहा है कि "मानो युद्ध की समस्या ही सबसे बड़ी समस्या हो।"

अपने समय की अनुगूँज :-

① मार्क्सवादी दर्शन का प्रभाव उस दौर में व्यापक था क्योंकि रूस की क्रांति

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के पश्चात भारत में भी साम्यवादी दलों का गठन हुआ था।

जब तक मनुज-मनुज का,
यह सुख-भाग नहीं सम होगा।
शमित न होगा कोलाहल,
संघर्ष नहीं कम होगा।।"

(2) पारलौकिकता एवं रूढ़िवादी विचारों का खंडन जो उस समय अम्बेडकरवादी आंदोलन एवं मार्क्सवादी प्रभाव में दिख रहा था।

ऊपर सबकुछ शून्य-शून्य है,
कुछ भी नहीं गगन में।
धर्मराज जो कुछ भी है,
मिट्टी में जीवन में।।"

(3) तात्कालीन समाज में जापान पर हुये परमाणु हमले के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कारण विज्ञान के प्रति आशंका एवं उसकी चिंताएं भी व्यक्त हुई है-

सावधान मनुष्य ; यदि विज्ञान है तलवार।
तो फेंक दे इसे तजकर,
मोह स्मृति के पार ॥'

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) संवेदना के धरातल पर 'भारत-भारती' की सीमाओं को रेखांकित कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

भारत-भारती, द्विवेदीयुगीन प्रमुख राष्ट्रवादी, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण का उद्बोधन काव्य है जिसमें औपनिवेशिक काल एवं तत्कालीन नवजागरण चेतना का जयघोष दिखाई देता है।

स्वतंत्रता संग्राम में जनता की भागीदारी बढ़ने एवं एकता की दृष्टि से लिखे इस काव्य में तत्कालीन रूढ़िवादी कुछ परंपराओं के प्रभाव होने के कारण आलोचक इसकी कुछ सीमाएँ बताते हैं जो निम्न है-

① गुप्त जी की दृष्टि आर्य,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

एवं हिन्दू

पुरुष केन्द्रित है जो तत्कालीन समाज में महिला आंदोलनों के प्रभाव नहीं होने तथा पुरुष प्रधान सत्ता के कारण स्थिति है।

"पूजा की पति की स्त्रियों ने,
भक्तिपूर्ण विधान से।
तब की विनय भक्ति,
भगवान से॥"

"वे आर्य ही थे जो कभी
अपने लिये जीते न थे।"

(2) दूसरी सीमा यह यह है कि उन्होंने अंग्रेजी शासन की आलोचना नहीं की बल्कि। मध्यकालीन मुस्लिम आक्रमणों को भारत की गुलामी का कारण बताया है।

(3) हिन्दू। पुरुष एवं आर्य केन्द्रित के कारण सांप्रदायिकता

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

को बढ़ावा देने का आरोप भी गुप्तजी पर लगा है

(4) गुप्त जी बौद्ध एवं जैन धर्म जैसे प्रगतिशील धर्मों को भ्रष्ट मानते हैं।

(5) गुप्त जी का नारी दृष्टिकोण भी आलोचकों के गले नहीं उतरा है तथा उसे महिला शोषण को बढ़ावा देने वाला बताया है

वस्तुतः तत्कालीन समाज में अंग्रेजी शासन की नीतियों एवं डिसलॉयल्टी का डर तथा परंपरा के हिस्से के रूप में और उद्बोधन हेतु अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन के रूप में ये गलतियां हुई है।

9/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation